Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 165-171

पर्यटन विकास की गतिशीलता एवं चुनौतियों का भौगोलिक अध्ययनः (सीकर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. धीरज कुमार[1] एवं मुकेश कुमार[2*]

[1]सह आचार्य, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]शोधार्थी, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

*Corresponding Author: mukeshgeo6878@gmail.com

Citation: *धीरज कुमार एवं मुकेश कुमार. (2025). पर्यटन विकास की गतिशीलता एवं चुनौतियों का भौगोलिक अध्ययनः (सीकर जिले के विशेष संदर्भ में). Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 165-171.*

सार

पर्यटन के इतिहास की गाथा भी अत्यन्त रोचक है। ईसा से चार हजार वर्ष पूर्व बेबीलोनिया में सर्वप्रथम पर्यटन की उपज के परिणाम सार्थक रूप से उभर कर सामने आए और तब ही वास्तविक रूप में यात्रा के महत्व को भी समझा गया। यहाँ यह कहा जा सकता है कि बेबीलोनिया में ही यात्रा के महत्व को पर्यटन के रूप में स्वीकारा गया। दरअसल मुद्रा के आविष्कार तथा व्यापार–वाणिज्य के विकास के साथ ही पर्यटन की भी सही अर्थों में शुरूआत हुई। मोहनजोदड़ों व हडप्पा की खुदाई में बहुत सी ऐसी वस्तुएं प्राप्त हुई है, जिनसे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस सभ्यता में भी लोग व्यापार तथा वाणिज्य के माध्यम से दूर देशों की यात्रा पर निकला करते थे। सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों में कुछ ऐसी वस्तुएं प्राप्त हुई है जिनसे उस समय की यात्राओं का पता लगता है। यहाँ तक कि सिंधु घाटी की सभ्यता की तो बहुत–सी वस्तुएं विदेशों में भी पाई गई है। सुमेरिया में हाल के वर्षों में कुछ ऐसी मुद्राएं मिली है जिनसे यह पता चलता है कि वहां से सिंधु घाटी का वास्तविक सम्बन्ध था। तीर्थ यात्रा, खोजी प्रकृति, शिक्षा व ज्ञान प्राप्ति के लिए मनुष्य की भूख, मनोरंजन, व्यवसाय–उद्योग के साथ ही साहसिक गतिविधियों के रूप में पर्यटन की सोच मनुष्य में आदिकाल से ही रही है। इससे प्रतीत होता है कि पर्यटन शब्द का प्रयोग 1876 से भी पहले होता था।

शब्दकोशः *पर्यटन, भौगोलिक अध्ययन, व्यवसाय–उद्योग, व्यापार–वाणिज्य।*

प्रस्तावना

पर्यटन का इतिहास एवं विकास

तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरंभ में, मिस्र तत्कालीन ज्ञात विश्व के लोगों के लिए एक लोकप्रिय स्थान था। कहा जाता है कि चार हजार साल पहले शासन करने वाले बेबीलोन के राजा शुल्गी ने सड़कों की सुरक्षा, उद्यानों और सम्मानित यात्रियों के लिए विश्राम गृहों के निर्माण का दावा किया था। अरस्तू ने घुमक्कड़ छात्रों के लिए अपना भ्रमणशील विद्यालय शुरू करने से पहले एशिया माइनर का दौरा किया था। यूनानी लोग स्पा, उत्सवों, एथलेटिक प्रतियोगिताओं और डेल्फी में ऑरेकल और एपिड्यूरल में एस्क्लेपियाड्स से परामर्श करने

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

के लिए यात्रा करते थे। वे खच्चरों और गाड़ियों से यात्रा करते थे और सड़क किनारे स्थित सराय में ठहरते थे। उसी समय, भारत में यात्रा सुविधाएँ उच्च स्तर की थीं। जब सिकंदर महान भारत पहुँचा, तो उसने हरे–भरे पेड़ों से घिरी अच्छी तरह से रखी हुई सड़कें, पानी के कुएँ, पुलिस स्टेशन और विश्राम गृह देखे। सम्राट अशोक के दूतों ने भगवान बुद्ध का संदेश फैलाने के लिए श्रीलंका, पूर्वी एशिया और पश्चिम एशिया की यात्रा की। चीनी यात्री भारत आए और उन्होंने भारत के भीतर अपनी प्रसिद्ध और व्यापक यात्राओं का विवरण दिया। रोमन संभवतः दुनिया के पहले आनंद यात्री थे। उन्होंने स्पा और मनोरंजन के अन्य केंद्र खोलकर आनंद चाहने वालों के लिए अपने सभी द्वार खोल दिए। यह मानने के कई कारण हैं कि चीन, भारत और जापान में भी उसी समय आनंद यात्रा का विकास हुआ। कुछ महान मध्ययुगीन यात्रियों में बेंजामिन ऑफ टुडेला, मार्को पोलो और इब्न बतूता शामिल थे। औद्योगिक क्रांति से पहले यात्रा मुख्यतः तीर्थयात्रा या व्यवसाय का विषय थी। सोलहवीं शताब्दी के अंत से, निजी यात्राओं में कुछ वृद्धि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, शुरुआत में शैक्षिक उद्देश्यों के लिए और बाद में अन्य स्थानों पर लोगों के रहन–सहन के तरीके के बारे में एक नई जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए। अठारहवीं शताब्दी में अवकाश धनी और सुसंस्कृत लोगों की विशेषता बन गया।

थॉमस कुक दुनिया के पहले पेशेवर ट्रैवल एजेंट थे। 1841 में, उन्होंने लीसेस्टर से लंदन और वापस की यात्रा के लिए 570 यात्रियों को ले जाने के लिए एक विशेष ट्रेन किराए पर ली। यह दुनिया का पहला सार्वजनिक रूप से विज्ञापित भ्रमण दौरा था। बाद में, उन्होंने यात्रा को अपना व्यवसाय बनाते हुए 1,50,000 से अधिक लोगों को लंदन में एक प्रदर्शनी देखने में मदद की। कुक की कंपनी का तेजी से विकास हुआ। इसने महाद्वीप, अमेरिका और दुनिया भर में एस्कॉर्टेड टूर सहित विभिन्न दिशाओं में विस्तार किया। आज भी, उनकी शुरू की गई कंपनी दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैवल कंपनियों में से एक है।

देश में पहली आरामदायक और सोने की सुविधा वाली ट्रेन जॉर्ज मॉर्टिमर पुलमैन यानी ''अग्रणी'' ने शुरू की थी। रेलवे के साथ–साथ, 1820 के आसपास निर्धारित समय पर चलने वाले नौकायन जहाजों में ट्रांस–अटलांटिक समुद्री यात्रा संभव हो गई। अब समुद्री यात्राएँ मुख्यतः वे लोग करते हैं जो सेवानिवृत्त हो चुके हैं और जिनके पास छुट्टियाँ बिताने के लिए पर्याप्त समय है। जहाँ रेलवे और स्टीमशिप कंपनियों ने बीसवीं सदी के यात्रियों की इच्छा पूरी की, वहीं मोटर कार या ऑटोमोबाइल नामक एक और नया उपकरण यात्रा परिदृश्य को बदलने के लिए सामने आया। आज, अनुमान है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में 80ः छुट्टियों की यात्राएँ ऑटोमोबाइल से होती हैं।

अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन स्थल

राजस्थान का भारत के पर्यटन में एक अनूठा स्थान है। एक ओर राजस्थान हमें योद्धाओं की वीरता की स्मृतियों से परिचित कराता है, तो दूसरी ओर शिल्पकारों, कारीगरों और कवियों का भी गौरव प्राप्त है। राजस्थान के किले, हवेलियाँ और स्तंभ हमें इसके गौरवशाली अतीत की याद दिलाते हैं। इसकी स्थापत्य कला, कला, संगीत, मेले और लोक कलाएँ दुनिया भर के पर्यटन स्थलों के आकर्षण का केंद्र हैं। राजस्थान अपने प्राकृतिक वैभव और ऐतिहासिक महत्व के कारण देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। मंदिरों, मस्जिदों, किलों, अभयारण्यों, झीलों, रेगिस्तानों आदि के कारण राजस्थान एक सुरम्य और मनमोहक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ है।

पर्यटन स्थलों का वर्गीकरण

राजस्थान के पर्यटन स्थलों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है –

- **प्राकृतिक स्थल –** प्रकृति ने राजस्थान को अनेक मनोरम स्थलों से सुसज्जित किया है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसमें पर्वतीय क्षेत्र – माउंट आबू, जैसलमेर में उजाड़ रेत के टीलों का दृश्य, पर्वत घाटियाँ – आमेर घाटी, अलवर की काली घाटी, देसूरी की नाल आदि शामिल हैं।

प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों के केंद्र – राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, मैनाल जैसे झरने आदि। कई प्राकृतिक स्थल ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों के केंद्र भी हैं।

- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल –** राजस्थान का इतिहास समृद्ध रहा है और यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन केंद्रों के रूप में विकसित किया गया है, इनमें प्रमुख हैं –
  - **ऐतिहासिक दुर्ग –** चित्तोड़गढ़, कुम्भलगढ़ (उदयपुर), नाहरगढ़, आमेर, जयगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जौधपुर), जूनागढ़ और लालगढ़ (बीकानेर), रणथम्भौर (सवाई माधोपुर), जैसलमेर, जालौर, नागौर, शेरगढ़ के किले, तारागढ़ (अजमेर), लोहागढ़ (भरतपुर), लक्ष्मणगढ़ दुर्ग, खण्डेला राज पेलेस (सीकर) आदि।
  - **पुरातात्विक स्थल –** कालीबंगा (हनुमानगढ़), आहड़ और बालाथल (उदयपुर), बैराठ (अलवर), बूँदी के गुफा चित्र, बागौर (भीलवाड़ा), गणेश्वर सभ्यता (सीकर)।
  - **महल और हवेलियाँ –** जयपुर, जौधपुर, उदयपुर, बीकानेर, भरतपुर, डीग, बूँदी, अलवर, सामोद के राजमहल और जैसलमेर की हवेलियाँ पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र हैं। सीकर जिले के अनेक किले और हवेलियाँ भी देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
  - **धार्मिक स्थल –** राजस्थान के धार्मिक स्थलों में नाथद्वारा, पुष्कर, कोलायत, रामदेवरा, एकलिंग जी, साँवरिया जी, गलता, केसरियाजी, कैलादेवी, सालासर, खाटूश्याम जी, जयपुर के गोविन्द देव जी का मंदिर, बिड़ला मंदिर, मोती डूँगरी का गणेश मंदिर, जीण–हर्ष मन्दिर आदि। जैन मंदिरों में राणकपुर, देलवाड़ा मंदिर, महावीर जी का मंदिर, नाकोड़ा, पदमपुरा आदि। मुस्लिम दरगाह में अजमेर में स्थित ख्वाजा मुइनुद्दीन हसन चिष्ती की दरगाह सर्वाधिक प्रसिद्ध है।
  - **सांस्कृतिक केन्द्र –** के रूप में ऐतिहासिक स्थलों के अतिरिक्त उत्कृष्ट स्थापत्य कला और वास्तुकला के केन्द्र राजस्थान में अनेक स्थलों पर हैं, जैसे –
    - **जयपुर** – हवामहल, जन्तर–मन्तर, चन्द्र महल, आमेर के राजाओं की छतरी एवं मंदिर आदि। **जैसलमेर** – पटवों की हवेली, नथमल जी की हवेली, रामगढ़ की हवेलियाँ आदि। **जौधपुर** – जसवंत थड़ा । **अजमेर** – अढ़ाई दिन का झोपड़ा । **बूँदी** – चौरासी खंभों की छतरी, रानी जी की बावड़ी, क्षार बाग की छतरियाँ । **चित्तौडगढ़** – विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ तथा किले पर स्थित मंदिर । **टोंक** – 'स्वर्ण कोठी', अरबी–फारसी शोध संस्थान । **कोटा** – जल मंदिर के पास की छतरियाँ । **झालरापाटन** – चन्द्रभागा नदी के किनारे मंदिर एवं सूर्य मंदिर । **माउण्ट आबू** – देलवाड़ा के मंदिर । **रणकपुर** – जैन मंदिर । **डूँडलोद** – इमारतें, हवेलियाँ । **सीकर** – फतेहपुर का नादिन ली प्रिंस सांस्कृतिक केन्द्र, नेहरू पार्क सीकर, सूर्य मन्दिर कड़ियाला।
  - **मेले –** राजस्थान के मेले सांस्कृतिक धरोहर हैं, जो आज भी परम्परागत रूप में लगते हैं, अतः पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ के प्रसिद्ध मेले हैं – पुष्कर (अजमेर), तिलवाड़ा (बाड़मेर), जसवन्त मेला (भरतपुर), करणीमाता और कपिलमुनि मेला (बीकानेर), गोगामेड़ी (हनुमानगढ़), रामदेवरा (जैसलमेर), परवतसर एवं मेड़ता मेला (नागौर), दषहरा मेला (कोटा), त्रिनेत्र गणेश रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर), केलादेवी (करौली), तीज एवं गणगौर (जयपुर), जाम्बेश्वर (मुकाम), सती मेला एवं लोहारगढ़ मेला (झुंझुनू), खाटूश्याम जी (सीकर), बैणेश्वर (डूँगरपुर), ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती उर्स (अजमेर) आदि। इसके अतिरिक्त हस्त कला के केन्द्र तथा पर्यटन विभाग द्वारा विकसित शिल्प ग्राम आदि भी पर्यटकों को राजस्थान में आकर्षित करते हैं। राजस्थान के अनेक उत्सव एवं त्यौहारों जैसे तीज, गणगौर, दशहरा, दुर्गाष्टमी, होली, अन्नकूट, नवरात्रा, दीपावली आदि भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पर्यटन संरचना/प्रारूप/मॉडल

ग्रामीण पर्यटन की नई चुनौतियों के बीच अध्ययन क्षेत्र में अपनाया गया ग्रामीण पर्यटन मॉडल, जो हाल के वर्षों में शेखावाटी पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभरा है, पर्यटन विपणन हेतु उत्कृष्ट और कुशल नीतियों को अपनाने के संदर्भ में भी समयानुकूल कहा जा सकता है। यदि इस संदर्भ में प्रयास किए जाएँ, तो निश्चित रूप से इसके दूरगामी परिणाम जिले में पर्यटन के रूप में हमारे सामने होंगे।

ग्रामीण पर्यटन

राजस्थान के सीकर जिले में ग्रामीण पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं। पूँजी और उत्पादन क्षमताओं के अलावा इस व्यवसाय के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। वैसे भी, राजस्थान के शेखावाटी के सीकर जिला पर्यटन की दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान रही है क्योंकि पारंपरिक लोक कलाओं, विशिष्ट इमारतों, वास्तुकला से समृद्ध इसकी विरासत के साथ–साथ रेत के टीलों में गूंजते लोकगीतों की मधुर ध्वनि दूर–दूर तक फैली हुई है। यदि यहां की समृद्ध पर्यटन विरासत के अनछुएं पहलुओं को उजागर करने और उनके उच्च–गुणवत्तापूर्ण विपणन की दिशा में गंभीर प्रयास किए जाएँ, तो न केवल यहाँ संतुलित विकास को गति दी जा सकती है, बल्कि अर्थव्यवस्था की क्षेत्रीय विकास दर को भी व्यापक रूप से बढ़ाया जा सकता है। पर्यटकों की आमद से अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन स्थलों का आकर्षण बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि पर्यटन उद्योग के उन पहलुओं पर ध्यान दिया जाए जो हमेशा नवीनता के साथ पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। शेखावाटी के सीकर जिले में घूमने आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों के आकर्षण पर नजर डालें, तो इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस क्षेत्र का ग्रामीण परिवेश उन्हें विशेष रूप से आकर्षित करता है। रेत के टीले, कतारों में बनी झोपड़ियाँ और उनमें रहने वाले लोगों के पहनावे, लोक परंपराओं के आकर्षण के साथ, जिले की हवेलियों के भित्ति चित्र दूर–दराज के देशों के पर्यटकों को स्वतः ही यहाँ खींच लाते हैं। यहां पर अधिक प्रसिद्ध स्थलों में बढ़ती भीड़ और यहाँ फैलता प्रदूषण पर्यटकों को निराश कर रहा है। यात्री अब शांति की तलाश में घर से निकलता है और अगर उसे यह शांति मिलती है, तो वह केवल यहाँ के गाँवों में ही मिलती है। वैसे भी भारत को गाँवों के एक राज्य के रूप में जाना जाता है। अगर गाँवों के एक राज्य, भारत की ग्रामीण जीवन–शैली की वास्तविक झलकियाँ पर्यटन मानचित्र पर दिखाई जाएँ, तो इसके दूरगामी परिणाम सामने आ सकते हैं।

वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना इस दृष्टि से और भी महत्वपूर्ण है कि यह पर्यटन उद्योग के विकास को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। यदि इसे राज्य स्तर पर पर्यटन उद्योग के विकास से जोड़ा जाए, तो यह ग्रामीण पर्यटन विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। यदि पर्यटन की संभावना वाले ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के प्रस्तावों को जिला ग्रामीण विकास एजेंसियों के माध्यम से व्यवस्थित करके उनके स्तर पर लागू किया जाए, तो इसके सकारात्मक परिणाम पर्यटन उद्योग के तीव्र विकास के रूप में सामने आ सकते हैं। एक ओर इससे गाँवों में छिपे विशेष पर्यटन के समुचित उपयोग की अनुमति मिलेगी, वहीं दूसरी ओर यह ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में सार्थक कदम उठाने में भी सहायक होगा। यदि ग्रामीण विकास योजनाओं के अंतर्गत ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए राज्य स्तर पर एक विशिष्ट कार्य योजना तैयार की जाए और उसे क्रियान्वित किया जाए, तो न केवल अध्ययन क्षेत्र सीकर जिले के पर्यटन को उल्लेखनीय बढ़ावा मिलेगा, बल्कि जिन गाँवों में ये आयोजन होते हैं, वहाँ पर्यटन सुविधाओं का विस्तार किया जाए और ऐसे गाँवों को पर्यटन अवसंरचना से जोड़ा जाए, तो देश में पर्यटकों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो सकती है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर न केवल जिले एवं शेखावाटी की समृद्ध पारंपरिक लोक कलाओं के कलाकारों को संरक्षित किया जा सकेगा, बल्कि गाँवों के प्राचीन मंदिरों, बावड़ियों, हवेलियों आदि को भी संरक्षित किया जा सकेगा। जिले में लगातार सूखे से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों के पारंपरिक कुटीर उद्योगों को भी इससे असाधारण सुरक्षा मिलेगी, क्योंकि बाहर से आने वाले पर्यटक स्थानीय हाथों से बनी पारंपरिक वस्तुओं को

खरीदने में विशेष रूप से रुचि रखते हैं। इससे ग्रामीण कारीगरों को अपने क्षेत्र में ही अपने उत्पादों के लिए बाजार मिल जाएगा और उनके खरीदार भी। यदि अध्ययन क्षेत्र के गाँवों को पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली गतिविधियों से दूर रखने के बारे में बढ़ते हुए विचार–विमर्श के माध्यम से इस दिशा में कदम उठाए जाएँ, तो निकट भविष्य में इसके सकारात्मक परिणाम राज्य के पर्यटन उद्योग की संरचना में स्वतः ही दिखाई देने लगेंगे। शेखावाटी के साथ सीकर जिले की लोक संस्कृति, जन–जीवन, प्राकृतिक परिवेश आदि की अनुकूलता यहाँ के ग्रामीण पर्यटन के विकास को नई दिशा प्रदान कर सकती है, बशर्ते इस दिशा में योजनाबद्ध तरीके से प्रयास किए जाएँ।

वर्तमान शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले के ग्रामीण पर्यटन के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में भी तेजी से उभर रहा है। यहां सीकर और लक्ष्मणगढ़ राज्य में प्रसिद्ध शिक्षा नगरी केंद्र माने जाते है। वहीं नीमकाथाना, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, सीकर रामगढ शोखवाटी, खण्डेला, रींगस आदि जगहों पर बनी प्राचीन बड़ी–बड़ी हवेलियां अपनी विशालता और भिति चित्रकारी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। जिन्हें देखने देशी–विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता है। अरावली पहाड़ों में सुरम्य जगहों पर बने ऐतिहासिक पर्यटन स्थल : लक्ष्मणगढ़ का किला, देवगढ़ का किला, गणेश्वर : प्राचीन उत्खनन स्थल, नेछवा का किला, थोई का किला, सिरोही का किला, रानोली में बराल किला, रामगढ का किला, सीकर का किला, जुबली हॉल और जिले के स्थापत्य कला पर्यटन स्थल : लक्ष्मणगढ़ की हवेलियां, फतेहपुर की हवेलियां और बावड़ियां, माधोनिवास कोठी, सरदुल सिंह की समाधि, रामगोपाल पोद्दार की छतरी, रामगढ शेखावाटी की हवेलियां , बियाणियों की हवेलीयां–सीकर तथा सीकर के प्राकृतिक पर्यटन स्थल : नेहरू पार्क, माधव तालाब, हरसावा गांव, शहंशाही बाग, सीकर जलप्रपात, अरावली की पहाड़ियां, नेचवा झारना, गालव कुण्ड या गालव गंगा (गणेश्वर का झरना) एवं सीकर जिले के सांस्कृतिक व धार्मिक पर्यटन स्थल : जीण माता मन्दिर, खाटूश्याम मन्दिर एवं श्याम कुण्ड, हर्ष नाथ मन्दिर, दरगाह हुजूर नजम सरकार, गोपीनाथ–जानकी नाथ का मन्दिर, शाकम्भरी माता मन्दिर, खण्डेला धाम, टपकेश्वर धाम, गणेश्वर का शिव मन्दिर, रघुनाथ जी का मन्दिर, मदन मोहन का मन्दिर, मनसा माता मन्दिर, रैवासा धाम, दो घण्टी बालाजी, कैलादेवी मन्दिर, सूर्य मन्दिर, कडियाला और शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में माना जाने वाला फतेहपुर राजस्थान का एक विचित्र ऊनिंदा रेगिस्तान शहर है।

डॉ. पंकज धीरेंद्र (2021) की महत्वपूर्ण रचना 'शेखावाटी की मन्दिर वास्तुकला एवं मूर्ति कला' (आठवीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी) में शेखावाटी क्षेत्र में अनेक मंदिर वह पर्यटन स्थलों का विस्तृत विवरण दिया है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सीकर जिला, शेखावाटी के ऐसे प्रदेशों में से एक है जिसका नाम अपनी प्राचीन गौरवमय में परंपरा के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसी राजस्थान की जयपुर रियासत 16 वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान अपने रूप निर्माण, रंग–योजना तथा स्थापत्य आदि के लिए विश्व विख्यात है। सीकर जिला धार्मिक सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है। शेखावाटी के सीकर जिले के मंदिर, किले, हवेलियां की वास्तुकला अद्वितीय है तथा इनका निर्माण स्थानीय वास्तुशास्त्र के मानकों पर आधारित है। ग्रामीण पर्यटन स्थलकलाकृतियो और अनोखी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर सांसारिक जीवन पर अध्यात्म के महत्व का प्रतीक है। मंदिर एक ऐसा पवित्र स्थान है। जहां प्रवेश मात्र से ही हम सकारात्मकता को महसूस करते हैं तथा ये यहां के जन जीवन को प्रभावित करते हैं और ग्रामीण पर्यटन उद्योग के महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं। जिससे मंदिरों के आस–पास के क्षेत्रमें रोजगार प्राप्त होता है तथा वहां के लोगों को आर्थिक सम्बल मिलता है।

शेखावाटी के सीकर जिले में ग्रामीण पर्यटन स्थल सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करते हैं। जिले के ग्रामीण पर्यटन स्थलों की संस्कृति अत्यंत रोचक व अदितीय है। अध्ययन क्षेत्र की संस्कृति विविधता व विशिष्टता से भरपूर है। पहनावे से लेकर हवेलियो, खानपान और त्योहार से लेकर मेलों में यहां कई रंग देखने को मिलते हैं। जो अतीत के सैकडों सालों में भी अपनी चमक बरकरार रखते हुए हैं यहां की संस्कृति में सरलता समरसता व

शौर्य के साथ आस्था, उल्लास, व आनंद भी अनन्त है और जिले के ग्रामीण पर्यटन स्थल जनता के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः सीकर जिले में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के महत्व संस्कृति और विरासत से समाज विकसित होता है और लोग इनकी समृद्धि से भी परिचित हो जाते हैं। सीकर जिला, शेखावाटी प्रदेश का एक ऐसा ग्रामीण पर्यटन स्थल है। जहां पर कई महल, किले, मंदिर, तीर्थ स्थल व हवेलियां स्थित है, जो इसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं। सीकर जिले को शेखावाटी की ओपन आर्ट गैलरी के रूप में मान्यता दी गई है। अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से काफी संपन्न है और यहां पर्यटकों के घूमने के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

सीकर जिले के गाँवों की विशेषता यह है कि यहाँ के रेत के टीले जहाँ मनमोहक हैं, वहीं यहाँ निवास करने वाले समुदाय के लोगों द्वारा किया जाने वाला गिदड़ नृत्य पूरे देश में अपनी अलग पहचान रखता है। निवासियों द्वारा किए जाने वाले लोक गिदड़ नृत्य के साथ–साथ रेत के टीलों के आकर्षण को पहचानने का ही परिणाम है कि अब शेखावाटी क्षेत्र राज्य के पर्यटन मानचित्र पर अपनी पहचान बनाने लगा है। इसी प्रकार यदि देश के ऐसे विशिष्ट दर्शनीय स्थलों वाले गाँवों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जाए और वहाँ पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाए, तो वहाँ आने वाले यात्रियों की पर्यटन गतिविधियों से न केवल वहाँ के निवासियों को रोजगार मिलेगा, बल्कि राज्य को भी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त हो सकेगी। यदि ग्रामीण विकास योजनाओं के अंतर्गत योजनाबद्ध तरीके से ग्रामीण पर्यटन विकास की दिशा में कार्य किया जाए, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम भी यहाँ मौजूद ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं का लाभ उठाकर इस क्षेत्र में उचित कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अख्तर, जावेद (1990), भारत में पर्यटन प्रबंधन, नई दिल्लीय आशीष।
2. अनुराग फादिया (2010), आधुनिक पर्यटन – मुद्दे और चुनौतियाँ, साइबर टेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. आचार्य पी.के. (1980), भारत का पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत, राजस्थान बुक हाउस, जयपुर।
4. आचार्य राम (1980) : भारत में पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत, आरबीएसए पब्लिशर्स, जयपुर।
5. आहूजा भारती और कूपर मैल्कम (2014), भारतीय ग्रामीण पर्यटन में महिलाओं की भूमिका : ग्रामीण विकास के लिए एक सामाजिक–बुनियादी ढाँचा मॉडल की ओर।
6. आहूजा डी.आर. (1980), राजस्थान के लोकगीत, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली।
7. इवोना पोलुचा और जानस जुकोवस्की (2010) मूल्यवान संसाधनों वाले क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन विकास के क्षेत्रीय पहलू : पोलैंड में वार्मिया और माजुरी क्षेत्र का मामला, ग्रामीण व्यवसाय और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए प्रबंधन सिद्धांत और अध्ययन।
8. ए.ए. पॉल नकेमंगू (2012), पर्यटन से सामुदायिक लाभ : मिथक या वास्तविकता, सोशांगुवे टाउनशिप का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ टूरिज्म हॉस्पिटैलिटी, 1 (5), 18–23।
9. एर्स्किन, मेजर के. डी. (1909) : दी राजपूताना बजेटियर्स, वोल्यूम 3 ए.।
10. एच. भीष्मपाल (2012) – पर्यटकों का आकर्षण : राजस्थान'' आकृति प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली।
11. ओडिलिया ए.एम. मेनेसेस और ऑरोरा ए.सी. टेक्सेरा (2011), पर्यटन फर्मों का अभिनव व्यवहार, अर्थशास्त्र और प्रबंधन अनुसंधान परियोजनाएँः एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1 (1), 25–35।
12. क्रिस्टीना बोनारू, डॉ. (2011) विरासत पर्यटन और संग्रहालय प्रबंधन।
13. क्रिस्टोफर जे. हॉलोवे (2006), पर्यटन का व्यवसाय, न्यूयॉर्क।

14. कुमार आशुतोष, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों का विकास, डीयू जर्नल ऑफ अंडरग्रेजुएट रिसर्च एंड इनोवेशन, 1 (2)।

15. कुमार के.के. (2001), पर्यटन स्थल प्रबंधन, कनिष्क प्रकाशन, दिल्ली।

16. कूपर इले (1994) शेखावाटी के चित्रित शहर : भारत के लिए एक मानचित्रण मार्गदर्शिका।

❑❑❑